International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
International Open Access Journal
ISSN No: 2456 - 6470 | www.ijtsrd.com | Volume - 2 | Issue – 1

मौर्यकलीन समाज की व्यवस्था का ऐतिहासिक मूल्यांकन

चंद्रपाल जांदू
सहायक आचार्य, इतिहास, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

मौर्य राजवंश (321-185 ईसापूर्व) प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था। मौर्य राजवंश ने 137 वर्ष भारत में राज्य किया। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके मंत्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है।यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के मैदानों (आज का बिहार एवं बंगाल) से शुरु हुआ। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र (आज के पटना शहर के पास) थी।चन्द्रगुप्त मौर्य ने 321 ईसा पूर्व में इस साम्राज्य की स्थापना की और तेजी से पश्चिम की तरफ़ अपना साम्राज्य का विस्तार किया। उसने कई छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों के आपसी मतभेदों का फायदा उठाया जो सिकन्दर के आक्रमण के बाद पैदा हो गये थे। 316 ईसा पूर्व तक मौर्यवंश ने पूरे उत्तरी पश्चिमी भारत पर अधिकार कर लिया था। चक्रवर्ती सम्राट अशोक के राज्य में मौर्यवंश का वृहद स्तर पर विस्तार हुआ। सम्राट अशोक के कारण ही मौर्य साम्राज्य सबसे महान एवं शक्तिशाली बनकर विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ। 321 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य की सहायता से अन्तिम नंद शासक धनानन्द को युद्ध भूमि मे पराजित कर मौर्य वंश की नींव डाली थी।चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दों को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यह साम्राज्य गणतन्त्र व्यवस्था पर राजतंत्र व्यवस्था की जीत थी। इस कार्य में अर्थशास्त्र नामक पुस्तक द्वारा चाणक्य ने सहयोग किया। विष्णुगुप्त व कौटिल्य उनके अन्य नाम हैं।चन्द्रगुप्त मौर्य (321 ई.पू. से 298 ई. पू.)- चन्द्रगुप्त मौर्य के जन्म वंश के सम्बन्ध में जानकारी ब्राह्मण धर्मग्रंथों, बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में मिलती है।विविध प्रमाणों और आलोचनात्मक समीक्षा के बाद यह साबित है कि चन्द्रगुप्त के पिता चंद्रवर्द्धन मोरिया थे। उसका पिप्पलिवन में जन्म हुआ था, धनानंद ने उन्हें धोखे से हत्या कर दी। चंद्रगुप्त मौर्य का पालन पोषण एक गोपालक द्वारा किय गया। चंद्रगुप्त मौर्य का गोपालक के रूप में ही राजा-गुण होने का पता चाणक्य ने कर लिया था तथा उसे एक हजार में पण मे गोपालक से छुड़वाया। तत्पश्चात् तक्षशिला लाकर सभी विद्या में निपुण बनाया। अध्ययन के दौरान ही सम्भवतः चन्द्रगुप्त सिकन्दर से मिला था। 323 ई. पू. में सिकन्दर की मृत्यु हो गयी तथा उत्तरी सिन्धु घाटी में प्रमुख यूनानी क्षत्रप फिलिप द्वितीय की हत्या हो गई।

जिस समय चन्द्रगुप्त राजा बना था भारत की राजनीतिक स्थिति बहुत खराब थी। उसने सबसे पहले एक सेना तैयार की और सिकन्दर के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ किया। 317 ई.पू. तक उसने सम्पूर्ण सिन्ध और पंजाब प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। अब चन्द्रगुप्त मौर्य सिन्ध तथा पंजाब का एकक्षत्र शासक हो गया। पंजाब और सिन्ध विजय के बाद चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य ने घनानन्द का नाश करने हेतु मगध पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में चन्द्रगुप्त से क्रूर धनान्द मारा गया । अब चन्द्रगुप्त भारत के एक विशाल साम्राज्य मगध का शासक बन गया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद सेल्यूकस उसका उत्तराधिकारी बना। वह सिकन्दर द्वारा जीता हुआ भू-भाग प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। इस उद्देश्य से 305 ई. पू. उसने भारत पर पुनः चढ़ाई की। चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर भारत के यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को पराजित कर एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (मकरान / बलुचिस्तान), पेरोपेनिसडाई (काबुल) के भू-भाग को अधिकृत कर विशाल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना (कार्नेलिया) का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया। उसने मेगस्थनीज को राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में नियुक्त किया।चन्द्रगुप्त मौर्य ने पश्चिम भारत में सौराष्ट्र तक प्रदेश जीतकर अपने प्रत्यक्ष शासन के अन्तर्गत शामिल किया। गिरनार अभिलेख (150 ई.पू.) के अनुसार इस प्रदेश में पुष्यगुप्त वैश्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्यपाल था। इसने सुदर्शन झील का निर्माण किया। दक्षिण में चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तरी कर्नाटक तक विजय प्राप्त की।चन्द्रगुप्त मौर्य के विशाल साम्राज्य में काबुल, हेरात, कन्धार, बलूचिस्तान, पंजाब, गंगा-यमुना का मैदान, बिहार, बंगाल, गुजरात था तथा विन्ध्य और कश्मीर के भू-भाग सम्मिलित थे, लेकिन चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में ईरान से लेकर पूर्व में बंगाल तथा उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में उत्तरी कर्नाटक तक विस्तृत किया था। अन्तिम समय में चन्द्रगुप्त मौर्य जैन मुनि भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला चले गये। 298 ई.पू. में संलेखना उपवास द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शरीर त्याग दिया।

बिन्दुसार (298 ई.पू. से 273 ई.पू.)- यह चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र व उत्तराधिकारी था जिसे वायु पुराण में भद्रसार और जैन साहित्य में सिंहसेन कहा गया है। यूनानी लेखक ने इन्हें अमित्रोचेट्स (संस्कृत शब्द "अमित्रघात = शत्रुओं का नाश करने वाला " से लिया गया) कहा है। यह 298 ई.पू. मगध साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा। जैन ग्रन्थों के अनुसार बिन्दुसार की माता दुर्धरा थी। थेरवाद परम्परा के अनुसार वह ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था।बिन्दुसार के समय में भारत का पश्चिम एशिया से व्यापारिक सम्बन्ध अच्छा था। बिन्दुसार के दरबार में सीरिया के राजा एणिटयोकस प्रथम ने डाइमेकस नामक राजदूत भेजा था। मिस्र के राजा टॉलेमी द्वितीय के काल में डाइनोसियस नामक राजदूत मौर्य दरबार में बिन्दुसार की राज्यसभा में आया था।दिव्यावदान के अनुसार बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो विद्रोह हुए थे, जिनका दमन करने के लिए पहली बार सुसीम दूसरी बार अशोक को भेजा प्रशासन के क्षेत्र में बिन्दुसार ने अपने पिता का ही अनुसरण किया। प्रति में उपराजा के रूप में कुमार नियुक्त किए। दिव्यादान के अनुसार अशोक अवन्ति का उपराजा था। बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली मंत्रीपरिषद थी जिसका प्रधान खल्लाटक था। बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक राज्य किया अन्ततः 273 ई पू. उसकी मृत्यु हो गयी।

अशोक (273 ई.पू. से 236 ई.पू.)- राजगद्दी प्राप्त होने के बाद अशोक को अपनी आन्तरिक स्थिति सुदृढ़ करने में चार वर्ष लगे। इस कारण राज्यारोहण चार साल बाद 269 ई. पू. में हुआ था।वह 273 ई पू. में सिंहासन पर बैठा। अभिलेखों में उसे देवानाप्रिय, देवानांपियदस्सी एवं राजा आदि उपाधियों से सम्बोधित किया गया है। पुराणों में उसे अशोक वर्धन और चण्ड अशोक कहा गया है। सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसार अशोक ने 99 भाइयों की हत्या करके राजसिंहासन प्राप्त किया था, लेकिन इस उत्तराधिकार के लिए कोई स्वतंत्र प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ है।दिव्यादान में अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी है, जो चम्पा के एक ब्राह्मण की पुत्री थी।बौध्य धर्म की शिंघली अनुश्रुतियों के अनुसार बिंदुसार की 16 पत्नियाँ और 101 संताने थी। जिसमे से सबसे बड़े बेटे का नाम सुशीम और सबसे छोटे बेटे का नाम तिष्य था। इस प्रकार बिन्दुसार के बाद मौर्य राजवंश का वारिश सुशीम था किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्यूंकि अशोक ने राज गद्दी के लिए उसे मार दिया। बौध्य ग्रन्थ महावंश और दीपवंश के अनुसार सम्राट अशोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या करके सिंहासन हासिल किया और सबसे छोटे भाई तिष्य को छोड़ दिया क्यूंकि उसने अशोक की मदत की थी अपने भाईयों को मरवाने में । आज भी पटना में वो कुआं है जहाँ अशोक ने अपने भाइयों और उनके समर्थक मौर्यवंशी आमात्यों को मारकर फेंक दिया था।सिंहली अनुश्रुतियों के अनुसार उज्जयिनी जाते समय अशोक विदिशा में रुका जहाँ उसने श्रेष्ठी की पुत्री देवी से विवाह किया जिससे महेन्द्र और संघमित्रा का जन्म हुआ। दिव्यादान में उसकी एक पत्नी का नाम तिष्यरक्षिता मिलता है। उसके लेख में केवल उसकी पत्नी का नाम करूणावकि है जो तीवर की माता थी। बौद्ध परम्परा एवं कथाओं के अनुसार बिन्दुसार अशोक को राजा नहीं बनाकर सुसीम को सिंहासन पर बैठाना चाहता था, लेकिन अशोक एवं बड़े भाई सुसीम के बीच युद्ध की चर्चा है।

भारत भर में जासूसों (गुप्तचर) का एक जाल सा बिछा दिया गया जिससे राजा के खिलाफ गद्दारी इत्यादि की गुप्त सूचना एकत्र करने में किया जाता था - यह भारत में शायद अभूतपूर्व था। एक बार ऐसा हो जाने के बाद उसने चन्द्रगुप्त को यूनानी क्षत्रपों को मार भगाने के लिए तैयार किया। इस कार्य में उसे गुप्तचरों के विस्तृत जाल से मदद मिली। मगध के आक्रमण में चाणक्य ने मगध में गृहयुद्ध को उकसाया। उसके गुप्तचरों ने नन्द के अधिकारियों को रिश्वत देकर उन्हे अपने पक्ष में कर लिया। इसके बाद नन्द शासक ने अपना पद छोड़ दिया और चाणक्य को विजयश्री प्राप्त हुई। नन्द को निर्वासित जीवन जीना पड़ा जिसके बाद उसका क्या हुआ ये अज्ञात है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जनता का विश्वास भी जीता और इसके साथ उसको सत्ता का अधिकार भी मिला।

परिचय

पहले के छोटे राज्यों के विपरीत मौर्य साम्राज्य की स्थापना सरकार के एक नए रूप में हुई, जो कि एक केंद्रीकृत साम्राज्य था।मौर्य साम्राज्य, आदिवासी गणराज्यों पर एक राजनीतिक प्रणाली के रूप में राजशाही की विजय का संकेत देता है। एडिट्स के साथ संयोजन में अर्थशास्त्र का एक अध्ययन प्रशासनिक संरचना के बारे में जानकारी प्रदान करता है।संरचना के केंद्र में राजा था जो कानूनों को लागू करने की शक्ति रखता था। कौटिल्य राजा को धर्म का प्रचार करने की सलाह देता है जब सामाजिक व्यवस्था वर्णों और आश्रमों (जीवन के चरणों) पर आधारित होती है।राजा को उनके द्वारा धर्मप्रवर्तक या सामाजिक व्यवस्था का प्रवर्तक कहा जाता है। राजा को सलाह देने के लिए मंत्रियों या मंत्र-परिषद की परिषद थी और कई बार इसने राजनीतिक जाँच के रूप में काम किया होगा।[1]

मौर्य केंद्रीयकृत राजतंत्र अशोक के तहत एक पितृसत्तावाद बन गया। अशोक अपने 1 अलग संस्करण में (धौली और जुगुड़ा) कहते हैं, "सावित मुनीसे पजा मामा"। (सभी पुरुष मेरे बच्चे हैं)। मौर्य राजा ने किसी भी दिव्य उत्पत्ति का दावा नहीं किया, फिर भी उन्होंने रिश्तेदारी और दैवीय शक्ति के बीच संबंध पर जोर देने का प्रयास किया।उस समय मगध भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था। मगध पर कब्जा होने के बाद चन्द्रगुप्त सत्ता के केन्द्र पर काबिज़ हो चुका था। चन्द्रगुप्त ने पश्चिमी तथा दक्षिणी भारत पर विजय अभियान आरंभ किया। इसकी जानकारी अप्रत्यक्ष साक्ष्यों से मिलती है। रूद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख में लिखा है कि सिंचाई के लिए सुदर्शन झील पर एक बाँध पुष्यगुप्त द्वारा बनाया गया था। पुष्यगुप्त उस समय अशोक का प्रांतीय राज्यपाल था। पश्चिमोत्तर भारत को यूनानी शासन से मुक्ति दिलाने के बाद उसका ध्यान दक्षिण की तरफ गया।चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर (अलेक्ज़ेन्डर) के सेनापति सेल्यूकस को 305 ईसापूर्व के आसपास हराया था। ग्रीक विवरण इस विजय का उल्लेख नहीं करते हैं पर इतना कहते हैं कि चन्द्रगुप्त (यूनानी स्रोतों में *सैंड्रोकोटस* नाम से) और सेल्यूकस के बीच एक संधि हुई थी जिसके अनुसार सेल्यूकस ने कंधार , काबुल, हेरात और बलूचिस्तान के प्रदेश चन्द्रगुप्त को दे दिए थे। इसके साथ ही चन्द्रगुप्त ने उसे 500 हाथी भेंट किए

थे। इतना भी कहा जाता है चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस की बेटी कर्नालिया (हेलना) से वैवाहिक संबंध स्थापित किया था। सेल्यूकस ने मेगास्थनीज़ को चन्द्रगुप्त के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था। प्लूटार्क के अनुसार "सैंड्रोकोटस उस समय तक सिंहासनारूढ़ हो चुका था, उसने अपने 6,00,00,000 सैनिकों की सेना से सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला और अपने अधीन कर लिया"। यह टिप्पणी थोड़ी अतिशयोक्ति कही जा सकती है क्योंकि इतना ज्ञात है कि कावेरी नदी और उसके दक्षिण के क्षेत्रों में उस समय चोलों, पांड्यों, सत्यपुत्रों तथा केरलपुत्रों का शासन था। अशोक के शिलालेख कर्नाटक में चित्तलदुर्ग, येरागुडी तथा मास्की में पाए गए हैं। उसके शिलालिखित धर्मोपदेश प्रथम तथा त्रयोदश में उनके पड़ोसी चोल, पांड्य तथा अन्य राज्यों का वर्णन मिलता है। चुंकि ऐसी कोई जानकारी नहीं मिलती कि अशोक या उसके पिता बिंदुसार ने दक्षिण में कोई युद्ध लड़ा हो और उसमें विजय प्राप्त की हो अतः ऐसा माना जाता है उनपर चन्द्रगुप्त ने ही विजय प्राप्त की थी। अपने जीवन के उत्तरार्ध में उसने जैन धर्म अपना लिया था और सिंहासन त्यागकर कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में अपने गुरु जैनमुनि भद्रबाहु के साथ संन्यासी जीवन व्यतीत करने लगा था।[2]

चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिंदुसार सत्तारूढ़ हुआ पर उसके बारे में अधिक ज्ञात नहीं है। दक्षिण की ओर साम्राज्य विस्तार का श्रेय यदा कदा बिंदुसार को दिया जाता है हँलांकि उसके विजय अभियान का कोई साक्ष्य नहीं है। जैन परम्परा के अनुसार उसकी माँ का नाम दुर्धरा था और पुराणों में वर्णित बिंदुसार ने 25 वर्षों तक शासन किया था। उसे अमित्रघात (दुश्मनों का संहार करने वाला) की उपाधि भी दी जाती है जिसे यूनानी ग्रंथों में *अमित्रोकेडीज़' का नाम दिया जाता है। बिन्दुसार आजिवक धरम को मानता था। उसने एक युनानी शासक एन् टियोकस प्रथम से सूखी अन्जीर, मीठी शराब व एक दार्शनिक की मांग की थी। उसे अंजीर व शराब दी गई किन्तु दार्शनिक देने से इंकार कर दिया गया*। सम्राट अशोक, भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास के सबसे महान शासकों में से एक हैं। अपने राजकुमार के दिनों में उन्होंने उज्जैन तथा तक्षशिला के विद्रोहों को दबा दिया था। पर कलिंग की लड़ाई उनके जीवन में एक निर्णायक मोड़ साबित हुई और उनका मन युद्ध में हुए नरसंहार से ग्लानि से भर गया। उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया तथा उसके प्रचार के लिए बहुत कार्य किये। सम्राट अशोक को बौद्ध धर्म मे उपगुप्त ने दीक्षित किया था। उन्होंने "देवानांप्रिय", "प्रियदर्शी", जैसी उपाधि धारण की। सम्राट अशोक के शिलालेख तथा शिलोत्कीर्ण उपदेश भारतीय उपमहाद्वीप में जगह-जगह पाए गए हैं। उनने धर्मप्रचार करने के लिए विदेशों में भी अपने प्रचारक भेजे। जिन-जिन देशों में प्रचारक भेजे गए उनमें सीरिया तथा पश्चिम एशिया का एंटियोकस थियोस, मिस्र का टोलेमी फिलाडेलस, मकदूनिया का एंटीगोनस गोनातस, साईरीन का मेगास तथा एपाईरस का एलैक्जैंडर शामिल थे। अपने पुत्र महेंद्र और एक बेटी को उन्होंने राजधानी पाटलिपुत्र से श्रीलंका जलमार्ग से रवाना किया। पटना (पाटलिपुत्र) का ऐतिहासिक महेन्द्रू घाट उसी के नाम पर नामकृत है। युद्ध से मन उब जाने के बाद भी सम्राट अशोक ने एक बड़ी सेना को बनाए रखा था। ऐसा विदेशी आक्रमण से साम्राज्य के पतन को रोकने के लिए आवश्यक था।मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। इसके अतिरिक्त साम्राज्य को प्रशासन के लिए चार और प्रांतों में बांटा गया था। पूर्वी भाग की राजधानी तौसाली थी तो दक्षिणी भाग की सुवर्णगिरि। इसी प्रकार उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की राजधानी क्रमशः तक्षशिला तथा उज्जैन (उज्जयिनी) थी। इसके अतिरिक्त समापा, इशिला तथा कौशाम्बी भी महत्वपूर्ण नगर थे। राज्य के प्रांतपालों *कुमार* होते थे जो स्थानीय प्रांतों के शासक थे। कुमार की मदद के लिए हर प्रांत में एक मंत्रीपरिषद तथा महामात्य होते थे। प्रांत आगे जिलों में बंटे होते थे। प्रत्येक जिला गाँव के समूहों में बंटा होता था। *प्रदेशिक* जिला प्रशासन का प्रधान होता था। *रज्जुक* जमीन को मापने का काम करता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी जिसका प्रधान *ग्रामिक* कहलाता था।[3]

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में नगरों के प्रशासन के बारे में एक पूरा अध्याय लिखा है। विद्वानों का कहना है कि उस समय पाटलिपुत्र तथा अन्य नगरों का प्रशासन इस सिंद्धांत के अनुरूप ही रहा होगा। मेगास्थनीज़ ने पाटलिपुत्र के प्रशासन का वर्णन किया है। उसके अनुसार पाटलिपुत्र नगर का शासन एक नगर परिषद द्वारा किया जाता था जिसमें ३० सदस्य थे। ये तीस सदस्य पाँच-पाँच सदस्यों वाली छः समितियों में बंटे होते थे। प्रत्येक समिति का कुछ निश्चित काम होता था। पहली समिति का काम औद्योगिक तथा कलात्मक उत्पादन से सम्बंधित था। इसका काम वेतन निर्धारित करना तथा मिलावट रोकना भी था। दूसरी समिति पाटलिपुत्र में बाहर से आने वाले लोगों खासकर विदेशियों के मामले देखती थी। तीसरी समिति का ताल्लुक जन्म तथा मृत्यु के पंजीकरण से था। चौथी समिति व्यापार तथा वाणिज्य का विनिमयन करती थी। इसका काम निर्मित माल की बिक्री तथा पण्य पर नज़र रखना था। पाँचवी माल के विनिर्माण पर नजर रखती थी तो छठी का काम कर वसूलना था।नगर परिषद के द्वारा जनकल्याण के कार्य करने के लिए विभिन्न प्रकार के अधिकारी भी नियुक्त किये जाते थे, जैसे - सड़कों, बाज़ारों, चिकित्सालयों, देवालयों, शिक्षा-संस्थाओं, जलापूर्ति, बंदरगाहों की मरम्मत तथा रखरखाव का काम करना। नगर का प्रमुख अधिकारी नागरक कहलाता था। कौटिल्य ने नगर प्रशासन में कई विभागों का भी उल्लेख किया है जो नगर के कई कार्यकलापों को नियमित करते थे, जैसे - लेखा विभाग, राजस्व विभाग, खान तथा खनिज विभाग, रथ विभाग, सीमा शुल्क और कर विभाग।मौर्य साम्राज्य के समय एक और बात जो भारत में अभूतपूर्व थी वो थी मौर्यो का गुप्तचर जाल। उस समय पूरे राज्य में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया था जो राज्य पर किसी बाहरी आक्रमण या आंतरिक विद्रोह की खबर प्रशासन तथा सेना तक पहुँचाते थे।भारत में सर्वप्रथम मौर्य वंश के शासनकाल में ही राष्ट्रीय राजनीतिक एकता स्थापित हुइ थी। मौर्य प्रशासन में सत्ता का सुदृढ़ केन्द्रीयकरण था परन्तु राजा निरंकुश नहीं होता था। मौर्य काल में गणतन्त्र का ह्रास हुआ और राजतन्त्रात्मक व्यवस्था सुदृढ़ हुई। कौटिल्य ने राज्य सप्तांक सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था,

जिनके आधार पर मौर्य प्रशासन और उसकी गृह तथा विदेश नीति संचालित होती थी - राजा, अमात्य जनपद, दुर्ग, कोष, सेना और, मित्र।

विचार-विमर्श

मंत्रिपरिषद या मंत्र-परिषद ने राजा को सलाह दी और कई बार राजनीतिक जाँच के रूप में कार्य किया हो सकता है। लेकिन परिषद की शक्तियां इस तथ्य के कारण सीमित थीं कि यह राजा था जिसने पहली बार में मंत्रियों को नियुक्त किया था। एक मंत्री के तीन गुण जो अस्त्रशास्त्र में तनाव पैदा करते हैं, वे हैं जन्म, अखंडता और बुद्धिमत्ता।काउंसिल का कोई निश्चित सदस्य नहीं था और यह जरूरत के मुताबिक विविध था। अर्थस्त्रस्त्र मुख्यमंत्री या महामन्त्री को सूचीबद्ध करता है और मंत्रियों और मंत्रियों की विधानसभा के बीच अंतर करता है ,ऐसा लगता है कि मंत्री परिषद या मंत्र-परिषद, शायद तीन या चार पार्षदों के एक छोटे समूह को, मुख्यमंत्री के साथ मिलकर, एक आंतरिक परिषद या एक करीबी सलाहकार निकाय के रूप में कार्य करने के लिए चुना गया था। यह महत्वपूर्ण सदस्यों में पुरोहित, सेनापति (कमांडर-इन-चीफ), महामन्त्री और युवराज शामिल थे।अमात्य कुछ प्रकार के प्रशासनिक कर्मी या सिविल सेवक थे जिन्होंने सर्वोच्च प्रशासनिक और न्यायिक नियुक्तियों को भरा। उनके वेतनमान, सेवा नियम और भुगतान की विधि स्पष्ट रूप से निर्धारित की गई थी। उनकी भूमिका और कार्य बहुत महत्वपूर्ण थे, उनके लिए सभी सरकारी काम आगे बढ़े।केंद्रीय प्रशासन का संचालन एक उच्च कुशल अधीक्षक या अधीक्ष द्वारा किया जाता था जो विभिन्न विभागों की देखरेख करता था। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र की दूसरी पुस्तक, अद्वैतक्षेत्र में, लगभग 27 आद्याक्षरों के काम का लेखा-जोखा दिया है। कुछ महत्वपूर्ण अधिकारियों का उल्लेख नीचे किया गया है।इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना का एक परिणाम ये हुआ कि पूरे साम्राज्य में आर्थिक एकीकरण हुआ। किसानों को स्थानीय रूप से कोई कर नहीं देना पड़ता था, हँलांकि इसके बदले उन्हें कड़ाई से पर वाजिब मात्रा में कर केन्द्रीय अधिकारियों को देना पड़ता था।उस समय की मुद्रा पण थी। अर्थशास्त्र में इन पणों के वेतनमानों का भी उल्लैख मिलता है। न्यूनतम वेतन 60 पण होता था जबकि अधिकतम वेतन 48,000 पण था।छठी सदी ईसा पूर्व (मौर्यों के उदय के कोई दो सौ वर्ष पूर्व) तकभारत में धार्मिक सम्प्रदायों का प्रचलन था। ये सभी धर्म किसी न किसी रूप से वैदिक प्रथा से जुड़े थे। छठी सदी ईसापूर्व में कोई 62 सम्प्रदायों के अस्तित्व का पता चला है जिसमें बौद्ध तथा जैन सम्प्रदाय का उदय कालान्तर में अन्य की अपेक्षा अधिक हुआ। मौर्यों के आते आते बौद्ध तथा जैन सम्प्रदायों का विकास हो चुका था। उधर दक्षिण में शैव तथा वैष्णव सम्प्रदाय भी विकसित हो रहे थे। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना राजसिंहासन त्यागकर कर जैन धर्म अपना लिया था। ऐसा कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने अपने गुरु जैनमुनि भद्रबाहु के साथ कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में संन्यासी के रूप में रहने लगे थे । इसके बाद के शिलालेखों में भी ऐसा पाया जाता है कि चन्द्रगुप्त ने उसी स्थान पर एक सच्चे निष्ठावान जैन की तरह आमरण उपवास करके दम तोड़ा था। वहां पास में ही चन्द्रगिरि नाम की पहाड़ी है जिसका नामाकरण शायद चन्द्रगुप्त के नाम पर ही किया गया था। अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म को अपना लिया था। बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद उसने इसको जीवन में उतारने की भी कोशिश की। उसने शिकार करना और पशुओं की हत्या छोड़ दिया तथा मनुष्यों तथा जानवरों के लिए चिकित्सालयों की स्थापना कराई। उसने ब्राह्मणों तथा विभिन्न धार्मिक पंथों के सन्यासियों को उदारतापूर्वक दान दिया। इसके अलावा उसने आरामगृह, एवं धर्मशाला, कुएं तथा बावरियों का भी निर्माण कार्य कराया।उसने धर्ममहामात्र नाम के पदवाले अधिकारियों की नियुक्ति की जिनका काम आम जनता में *धम्म* का प्रचार करना था। उसने विदेशों में भी अपने प्रचारक दल भेजे। पड़ोसी देशों के अलावा मिस्र, सीरिया, मकदूनिया (यूनान) साइरीन तथा एपाइरस में भी उसने धर्म प्रचारकों को भेजा। हंलांकि अशोक ने खुद बौद्ध धर्म अपना लिया था पर उसने अन्य सम्प्रदायों के प्रति भी आदर का भाव रखा । सैन्य व्यवस्था छः समितियों में विभक्त सैन्य विभाग द्वारा निर्दिष्ट थी। प्रत्येक समिति में पाँच सैन्य विशेषज्ञ होते थे।पैदल सेना, अश्व सेना, गज सेना, रथ सेना तथा नौ सेना की व्यवस्था थी।सैनिक प्रबन्ध का सर्वोच्च अधिकारी अन्तपाल कहलाता था। यह सीमान्त क्षेत्रों का भी व्यवस्थापक होता था। मेगस्थनीज के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना छः लाख पैदल, पचास हजार अश्वारोही, नौ हजार हाथी तथा आठ सौ रथों से सुसज्जित अजेय सैनिक थे।मौर्य साम्राज्य की नींव ने भारत के इतिहास में एक नए युग का प्रारम्भ किया | पहली बार भारत ने राजनीतिक समानता को प्राप्त किया | [4] इसके अलावा, इस युग से इतिहास लिखना अब और भी ज्यादा आसान हो गया क्यूंकि अब घटना क्रम व स्त्रोत बिलकुल सटीक थे | स्वदेशी और विदेशी स्त्रोतों के अलावा, इस युग का इतिहास लिखने के लिए कई शिलालेखों के दस्तावेज़ भी उपलबद्ध हैं | समकालीन साहित्य और पुरातात्विक खोज इसकी जानकारी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं |

परिणाम

अक्षयपात्रदक्ष महालेखाकार थे, जो मुद्रा और खातों के दो कार्यालयों के प्रभारी थे। सीतादक्ष मुकुट भूमि या सरकारी कृषि खेतों के कृषि का अधीक्षक था।अकाराद्यक्ष खनन के अधीक्षक थे और उनके पास खानों, धातु विज्ञान, रत्नों और कीमती पत्थरों का वैज्ञानिक ज्ञान था। लवण्यनादिक्ष नमक अधीक्षक थे, क्योंकि नमक का निर्माण एक सरकारी एकाधिकार था।नवधनाक्ष बंदरगाहों के अधीक्षक थे जिन्होंने जलमार्गों द्वारा यातायात और आवागमन को नियंत्रित किया। पन्नाधाय वाणिज्य के नियंत्रक थे जो वस्तुओं की आपूर्ति, खरीद और बिक्री के नियंत्रण के प्रभारी थे।सुलक्षणाक्ष सीमा शुल्क और टोलों के कलेक्टर थे। द सुरेशयक्ष एक्साइज के अधीक्षक थे जिन्होंने शराब के निर्माण और बिक्री को नियंत्रित किया था। पौत्रवध्याक्ष वजन और उपायों का अधीक्षक था। लाक्षागृह, टकसाल आदि का अधीक्षक था।सेना का नेतृत्व अक्सर राजा स्वयं करते थे। यह आखिरी मौर्य के दिनों में ही था कि हम एक सेनापति को राजा की देखरेख करते और सैनिकों की निष्ठा को स्वयं में स्थानांतरित करते हुए पाते हैं। प्लिनी के अनुसार, चंद्रगुप्त की सेना में रथों के अलावा 6, 00,000 पैदल सैनिक, 30,000 घुड़सवार और 9,000 हाथी शामिल थे।यह सेनापति के नियंत्रण में था जिनके अधीन सेना के विभिन्न पंखों और इकाइयों के कई आद्याक्ष थे जैसे कि पैदल सेना (पाद्याक्ष), अश्वारोही

(अश्वध्याक्ष), युद्धकपद (हस्तिध्यक्ष), नौसेना (नवधनाक्ष), रथ (रथदत्त)), और शस्त्रागार (आयुधराध्यक्षा)।मौर्य इतिहास के बारे में दो प्रकार के स्त्रोत उपलब्ध हैं | एक साहित्यक है और दूसरा पुरातात्विक है | साहित्यक स्त्रोतों में कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखा दत्ता का मुद्रा राक्षस, मेगास्थेनेस की इंडिका, बौद्ध साहित्य और पुराण हैं | पुरातात्विक स्त्रोतों में अशोक के शिलालेख और अभिलेख और वस्तुओं के अवशेष जैसे चांदी और तांबे के छेद किए हुए सिक्के शामिल हैं |[5]

1. साहित्यक स्त्रोत :

a) कौटिल्य -अर्थशास्त्र

यह पुस्तक कौटिल्य (चाणक्य का दूसरा नाम) के द्वारा राजनीति और शासन के बारे में लिखी गई है | यह पुस्तक मौर्य काल के आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में बताती है | कौटिल्य, चन्द्र गुप्त मौर्य, मौर्य वंश के संस्थापक, का प्रधानमंत्री था |

b) मुद्रा राक्षस

यह पुस्तक गुप्ता काल में विशाखा दत्ता द्वारा लिखी गई| यह पुस्तक बताती है कि किस तरह चन्द्रगुप्त मौर्य ने सामाजिक आर्थिक स्थिति पर रोशनी डालने के अतिरिक्त, चाणक्य की मदद से नन्द वंश को पराजित किया था |

c) इंडिका

इंडिका, मेगास्थेनेस द्वारा रची गई जोकि चंद्र गुप्त मौर्य की सभा में सेलेकूस निकेटर का दूत था |यह मौर्य साम्राज्य के प्रशासन, 7 जाति प्रणाली और भारत में ग़ुलामी का ना होना दर्शाती है | यद्यपि इसकी मूल प्रति खो चुकी है, यह पारंपरिक यूनानी लेखकों जैसे प्लुटार्च, स्ट्राबो और अर्रियन के लेखों में उदहारणों के रूप में सहेजे हुए हैं |

d) बौद्ध साहित्य

बौद्ध साहित्य जैसे जातक मौर्य काल के सामाजिक- आर्थिक स्थिति के बारे में बताता है जबकि बौद्ध वृतांत महावमसा और दीपवांसा अशोक के बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने की भूमिका के बारे में बताते हैं | दिव्यवदं, तिब्बत बौद्ध लेख अशोक के बौद्ध धर्म का प्रचार करने के योगदान के बारे में जानकारी देते हैं |

e) पुराण

पुराण मौर्य राजाओं और घट्नाक्रमों की सूचि के बारे में बताते हैं |

पुरातात्विक स्त्रोत

अशोक के अभिलेख

अशोक के अभिलेख, भारत के विभिन्न उप महाद्वीपों में शिलालेख, स्तंभ लेख और गुफ़ा शिलालेख के रूप में पाये जाते हैं | इन अभिलेखों की व्याखाया जेम्स प्रिंकेप ने 1837 AD में किया था | ज्यादातर अभिलेखों में अशोक की जनता को घोषणाएँ हैं जबकि कुछ में अशोक के बौद्ध धर्म को अपनाने के बारे में बताया गया है |

वस्तु अवशेष

वस्तु अवशेष जैसे NBPW (उत्तत काल के पोलिश के बर्तन) चाँदी और तांबे के छेद किए हुए सिक्के मौर्य काल पर रोशनी डालते हैं |

अशोक के अभिलेखों और उसकी जगह के बारे में एक छोटा विवरण नीचे दिया गया है [6]:

अशोक के राजाज्ञा और शिलालेख	**यह क्या दर्शाता है ?**	**इसका स्थान**
14 मुख्य शिलालेख	धम्मा के सूत्र	कलसी (देहरादून, उत्तराखंड, मनशेरा(हाज़रा, पाकिस्तान), जूनागढ़ (गिरनार, गुजरात), जौगड़ा(गंजम,उड़ीसा)येर्रागुड्डी (कुरनूल, आंध्रा प्रदेश)शाहबज़्गढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान)
2 कलिंग शिलालेख	कलिंग युद्ध के बाद नया प्रशासन प्रणाली	दौली या तोसाली (पुरी, उड़ीसा), जौगड़ा (गंजम , उड़ीसा)
लघु शिलालेख	अशोक का निजी इतिहास और उसका धम्मा सारांश	ब्रह्मगिरि (कर्नाटक), रूपानाथ (मध्य प्रदेश)सिद्धपुर (कर्नाटक)मस्की (आंध्रा प्रदेश)
भबरू –बैरात शिलालेख	अशोक का बौद्ध धर्म में तब्दील होना	भबरू –बैरात (राजस्थान)
स्तंभ अभिलेख		
7 स्तंभ अभिलेख	शिलालेखों से जुड़ी वस्तुएँ	इलाहाबाद, रामपूर्व (बिहार)
4 लघु स्तंभ अभिलेख	अशोक का धम्मा के प्रति कट्टरपन के चिन्ह	साँची (मध्य प्रदेश), सारनाथ, इलाहाबाद
2 तराई स्तंभ अभिलेख	अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति आदर	लुम्बिनी (नेपाल)
गुफ़ा अभिलेख		
3 बराबर गुफ़ा अभिलेख	अशोका की सहनशीलता	बराबर पर्वत

अशोक के 14 शिलालेख और उसके विषय वस्तु

राजाज्ञा 1: पशु बाली पर प्रतिबंध
राजाज्ञा 2: समाजिक कल्याण के उपायों को दर्शाना
राजाज्ञा 3 : ब्राह्मण के लिए आदर
राजाज्ञा 4 : बड़ों का आदर करना
राजाज्ञा 5: धम्मा महामंत्रों को नियुक्त करना और उनके कार्य बताना
राजाज्ञा 6: धम्मा महामंत्रों को आदेश देना ।
राजाज्ञा 7: सभी धार्मिक संप्रदायों के प्रति सहनशीलता
राजाज्ञा 8: धम्मा यात्राएं
राजाज्ञा 9 : व्यर्थ के समारोहों और रीतिरिवाजों को हटाना
राजाज्ञा 10: युद्ध के बजाए जीत के लिए धम्मा का प्रयोग करना
राजाज्ञा 11: धम्मा नितियों को समझाना
राजाज्ञा 12: सभी धार्मिक संप्रदायों से सहनशीलता के लिए प्रार्थना करना
राजाज्ञा 13: कलिंग युद्ध
राजाज्ञा 14: धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करना

निष्कर्ष

कौटिल्य सैनिकों को वंशानुगत (मौला), किराए के सैनिकों (भृत्तक), वन जनजातियों द्वारा आपूर्ति की जाने वाली सेना (अटाविवाला) और सहयोगी दलों (मित्रावाला) से सुसज्जित करता है। पहले प्राथमिक महत्व के थे और राजा की स्थायी सेना का गठन किया।वे संभवत: मेगस्थनीज द्वारा सैनिकों की पांचवीं श्रेणी का वर्णन करने के लिए संदर्भित थे। कौटिल्य सैन्य कमांडरों के विभिन्न रैंकों के वेतन के बारे में भी बात करता है। उदाहरण के लिए, सेनापति को प्रति वर्ष 48,000 का वेतन मिलता था।मेगस्थनीज सशस्त्र बलों के प्रशासन का वर्णन करता है, जिसमें प्रत्येक में पाँच सदस्यों वाली छह समितियाँ शामिल हैं। पहली समिति नौसैनिक युद्ध से संबंधित थी, दूसरा युद्ध सामग्री के परिवहन की देखरेख करने वाले आधुनिक कमिसारीट के बराबर, तीसरी पैदल सेना की देखरेख करने वाली, चौथी निगरानी करने वाली घुड़सवार सेना, पाँचवीं रथों से संबंधित थी और छः लोग हाथी वाहिनी की निगरानी कर रहे थे।[7]

जासूसी विभाग को महाध्यापसार, दोनों स्थिर (समस्थान) और भटकन (संचारी) के नियंत्रण में गुड्डापुरुषों (गुप्त एजेंटों) द्वारा संचालित किया गया था। अधिकारियों ने इस संवर्ग के कर्मियों का गठन किया।विभिन्न प्रकार के एजेंटों, निष्कर्षों और छात्रों से लेकर गृहस्वामी और 'जहरीली' लड़कियों (विष्ण्याओं) को नियुक्त किया गया था। वे मेगस्थनीज़ के 'ओवरसियर' और पटिवेदाक या विशेष पत्रकारों और पुलिसानिस या असोकन के राजा के एजेंट से मेल खाते हैं।

राजस्व विभाग:

केंद्रीय प्रशासन राजस्व के नियंत्रण से संबंधित कई कार्यालयों के माध्यम से आयोजित किया गया था, और प्रत्येक विशेष अधिकारी के अधीन।

Sannidhata:
खजांची शाही खजाने के भंडारण के लिए जिम्मेदार था, और नकदी और तरह दोनों में राज्य की आय।

Samaharta:
वह राज्य के विभिन्न हिस्सों से राजस्व के संग्रह के प्रभारी थे और उन्होंने अक्षयपात्रदक्ष (महालेखाकार) के कार्यों की देखरेख करके आय और व्यय का ध्यान रखा। अस्त्रशास्त्र में सूचीबद्ध राजस्व के स्रोतों में शहर, भूमि, खदान, जंगल, सड़क, टोल, जुर्माना लाइसेंस, निर्मित उत्पाद, विभिन्न प्रकार के माल और कीमती पत्थर शामिल हैं।कौटिल्य कुछ अन्य प्रकार की आय को संदर्भित करता है जैसे कि सेनाभक्तम, सेना द्वारा उस क्षेत्र पर लगाया जाने वाला दंडात्मक कर, जिसके माध्यम से यह पारित हुआ, और पिंडकारा, समय-समय पर गांवों द्वारा योगदान दिया गया एक निश्चित कर।महालेखाकार ने राज और शाही घराने दोनों का हिसाब रखा। उन्हें लिपिकों (कर्मिकों) के शरीर द्वारा सहायता प्रदान की गई थी। राजस्व का मुख्य स्रोत भूमि कर था जो कि उपज का एक-चौथाई से एक-छठा हिस्सा था और राजस्व अधिकारी, एग्रोनोमोई द्वारा एकत्र किया जाता था, जिन्होंने भूमि को मापा, कर लगाया और एकत्र किया।आय का दूसरा प्रमुख स्रोत टोल-टैक्स था जो सभी लेखों (अनाज, मवेशियों और कुछ अन्य वस्तुओं को छोड़कर) पर लगाया गया था। यह कर लगभग 10 प्रतिशत था। शूद्र, कारीगर और अन्य जो श्रम से बचते थे, उन्हें प्रत्येक महीने में एक दिन मुफ्त में काम करना पड़ता था।स्ट्रैबो का उल्लेख है कि शिल्पकारों (शाही शिल्पकारों को छोड़कर), चरवाहों और पतियों ने सभी करों का भुगतान किया। राजा की अपनी संपत्ति या शाही भूमि में सीता नामक आय होती थी। दो प्रकार के करों, बाली और भागा, को अशोकन संस्करणों में संदर्भित किया जाता है।रुम्मिनदेई एडिक्ट रिकॉर्ड करता है कि लुम्बिनी गांव, जहां बुद्ध का जन्म हुआ था, को बाली से छूट दी गई थी और उन्हें भगा के केवल आठवें हिस्से का भुगतान करना था। भगा को कृषि उपज और मवेशियों पर एक-छठी (शादाभा) की दर से लगाया जाता था जबकि बाली एक धार्मिक श्रद्धांजलि थी। अस्त्रशास्त्र के अनुसार, ब्राह्मणों, महिलाओं, बच्चों, कवचधारियों, पुत्रों और राजा के पुरुषों को कर चुकाने से छूट दी गई थी।

न्यायिक और पुलिस विभाग:

राजा न्याय का प्रमुख था - कानून का फव्वारा प्रमुख और गंभीर परिणामों के सभी मामलों का फैसला उसके द्वारा किया गया था। कौटिल्य दो प्रकार के न्यायालयों के अस्तित्व को संदर्भित करता है - धर्मस्थी (सिविल मामलों से निपटने) और कंटकसोधन (आपराधिक मामलों से निपटने)। प्रेदेसिका, महामंत्रों और राजुकों की अध्यक्षता में शहरों और गांवों में विशेष अदालतें थीं। कौटिल्य ने कानून के चार स्रोतों के बारे में उल्लेख किया है।वे धर्म (पवित्र कानून), विग्रह (उपयोग), चारित्रम (रीति-रिवाज और मिसाल) और राजसाना (शाही उद्घोषणा) हैं। प्रदेसिका प्रमुख पुलिस अधिकारी थे, जिनका कर्तव्य अपने अधिकार क्षेत्र के भीतर क्षेत्र में होने वाले अपराधों की जांच करना था। सभी प्रमुख केंद्रों में पुलिस मुख्यालय पाया गया।गाँवों के बीच में एक ठनिया थी, ४०० गाँवों में एक द्रोणमुख, २०० गाँवों में एक खरवाटिका और १० गाँवों

में एक साधना थी। जेल उचित बंदनागर चरक नामक पुलिस लॉक-अप से अलग था।[8]

प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन:

महानगरीय क्षेत्र के अलावा जो सीधे शासित था, साम्राज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक में एक राजकुमार या शाही परिवार (कुमारा और आर्यपुत्र) के सदस्य थे। अशोक के तहत, चार प्रांत थे: तक्षशिला, पश्चिमी प्रांत (अवंतिरथ) में राजधानी के साथ उत्तरी प्रांत (उत्तरपथ), उज्जैन में मुख्यालय के साथ पूर्वी प्रांत (प्राचीपथ), तोसली के साथ केंद्र और दक्षिणी प्रांत (दक्षिणापथ) इसके प्रांत के साथ। सुवर्णगिरी के रूप में राजधानी।

पाटलिपुत्र में अपनी राजधानी के साथ केंद्रीय प्रांत मगध, पूरे राज्य का मुख्यालय भी था। वाइसराय के पास अपने कुछ अधिकारियों को नियुक्त करने की शक्ति थी जैसे कि महामत्ता, जो हर पांच साल में दौरे पर जाते थे।तक्षशिला और उज्जैन जैसे सबसे महत्वपूर्ण प्रांत सीधे राजकुमारों (कुमार) की कमान में थे। प्रशासन के प्रयोजनों के लिए प्रांतों को जिलों में विभाजित किया गया था और अधिकारियों के समूह एक जिले के प्रभारी थे। प्रांतों के तीन प्रमुख अधिकारी थेप्रदेशिका, राजुका और युक्ता थे।प्रादेशिका एक जिले के समग्र प्रशासन के प्रभारी थे - राजस्व के संग्रह की निगरानी करना और ग्रामीण क्षेत्रों में और अपने जिले के भीतर कस्बों में कानून व्यवस्था बनाए रखना। राजुका भूमि के सर्वेक्षण और मूल्यांकन के लिए जिम्मेदार था।मेगस्थनीज ने संभवतः उन्हें कृषि प्रशासन के रूप में संदर्भित किया जिसे उन्होंने ग्रामीण प्रशासन की रीढ़ बनाया। युक्तात्माओं को अधीनस्थ अधिकारी दिखाई देते थे जिनके कर्तव्य मोटे तौर पर सचिवीय कार्य और लेखा थे।जिला स्तर और गाँव के बीच प्रशासन का एक मध्यवर्ती स्तर था। यहां इकाई का गठन पांच या दस गांवों के समूह द्वारा किया गया था। इस इकाई के प्रशासन से संबंधित दो महत्वपूर्ण अधिकारी गोप और वंशिका थे।गोप ने यूनिट में एक एकाउंटेंट के रूप में काम किया। उनके कर्तव्यों में गाँव की सीमाएँ स्थापित करना, प्रत्येक गाँव की आबादी को उनकी कर-भुगतान क्षमता, उनके व्यवसायों और उनकी आयु के अनुसार रखना, प्रत्येक गाँव के पशुधन पर ध्यान न देना इत्यादि शामिल थे। कर को चरणिका द्वारा एकत्र किया गया था सीधे प्रदेसिका के तहत काम किया।ग्राम (ग्राम) प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी और काफी हद तक स्वायत्तता का आनंद लिया। व्यक्तिगत गाँवों के पास अधिकारियों का अपना समूह होना चाहिए जो सीधे तौर पर गोपियों के प्रति उत्तरदायी थे।गाँव के मुखिया को ग्रामिका कहा जाता था जिसे ग्राम-विधाओं या गाँव के बुजुर्गों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। ग्रामिका एक पेड नौकर नहीं था; उन्हें गाँव के बुजुर्गों में से चुना गया था। उन्होंने गांव के कर संग्रह और अनुशासन और रक्षा जैसे अन्य मामलों की निगरानी की हो सकती है।

नगरपालिका प्रशासन:

अर्थशास्त्र में नगराका या शहर के अधीक्षक का उल्लेख है जो शहर में कानून और व्यवस्था के रखरखाव के लिए जिम्मेदार थे। उन्हें दो अधीनस्थ अधिकारियों, गोपा और चरणिका द्वारा सहायता प्रदान की गई। आसोकन शिलालेखों में नागालवियोहलका महामातों का उल्लेख है और उनकी न्यायिक क्षमता में उनका उल्लेख है।नगर प्रशासन का वर्णन करने में, मेगस्थनीज एक अधिक विस्तृत प्रणाली की रूपरेखा तैयार करता है। उनके अनुसार, अधिकारियों को पांच की सदस्यता के साथ प्रत्येक को छह समितियों में विभाजित किया गया था। पहली समिति औद्योगिक कला से संबंधित मामलों से संबंधित थी।दूसरे ने विदेशियों को दी जाने वाली सुविधाओं के साथ इस पर कब्जा कर लिया। तीसरे ने एक जनगणना और कराधान के उद्देश्य से जन्म और मृत्यु दोनों का एक रजिस्टर रखा। चौथी समिति व्यापार और वाणिज्य के मामलों की प्रभारी थी।पांचवीं समिति ने निर्मित लेखों की सार्वजनिक बिक्री का पर्यवेक्षण किया। छठी समिति ने बिक्री किए गए लेखों पर कर एकत्र किया, यह खरीद मूल्य का दसवां हिस्सा था।[9]

आर्थिक स्थिति:

मौर्यों के अधीन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था, हालांकि व्यापार लगातार महत्वपूर्ण होता जा रहा था। ऐसा लगता है कि खेती करने वालों ने अधिकांश आबादी का गठन किया और कृषि पर कर राजस्व का मुख्य स्रोत थे।

कृषि:

साम्राज्य के कुछ हिस्सों में भूमि की सांप्रदायिक स्वामित्व के साथ गण व्यवस्था शुरू हुई। राज्य के स्वामित्व वाली भूमि के संदर्भ भी हैं जिन्हें सीता भूमि कहा जाता है, जिन्हें सीधे तौर पर काम पर रखने वाले मजदूरों की देखरेख में काम किया जाता था या उन्हें अलग-अलग किसानों को पट्टे पर दिया जाता था।बाद के मामले में, उपज का एक हिस्सा राज्य को भुगतान किया जाना था। इनके अतिरिक्त भूमि के निजी मालिक थे जिन्हें राजा को कर देना आवश्यक था। गाँव के चरागाह बड़े पैमाने पर पूरे समुदाय के पास थे।उपजाऊ गंगा के मैदान में विभिन्न प्रकार के करों का उल्लेख किया जाता है जैसे कि बाली, भागा, शूलका, कारा, आदि मेगास्थनीज कहते हैं कि एक चौथाई उपज को कर के रूप में चुकाना पड़ता था। यह संभावना है कि पाटलिपुत्र के आसपास के उपजाऊ क्षेत्र में यह आंकड़ा था।

दूसरी ओर, अधिकांश संस्कृत ग्रंथ यह कहते हैं कि उपज का छठा हिस्सा राजा द्वारा दावा नहीं किया जा सकता है। यह बहुत संभावना नहीं है कि पूरे क्षेत्र में एक समान कर लगाया गया था क्योंकि मिट्टी की उर्वरता एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न थी, और यह उपज के एक-चौथाई से एक-छठे हिस्से तक भिन्न थी।बिचौलियों में लाए बिना व्यक्तिगत कृषक से राजा के अधिकारियों द्वारा इसे सीधे एकत्र किया गया था। इसके अलावा, अस्त्रशास्त्र में कहा गया है कि कर की राशि सिंचाई सुविधाओं की प्रकृति पर भी निर्भर करेगी और एक-पांचवें से एक तिहाई तक होगी।रुम्मिनदेई शिलालेख एकमात्र अशोकन शिलालेख है जो कराधान का सटीक संदर्भ देता है। इधर अशोक का कहना है कि उसने बुद्ध के पवित्र जन्म-स्थान के लोगों को रियायत के रूप में भगा (मिट्टी का उत्पादन) एक-आठवें (अठभोगिया) में घटा दिया था।एक और दिलचस्प तथ्य जो इस शिलालेख से निकलता है, वह

यह है कि राजा सीधे भूमि श्रद्धांजलि से छूट के सवाल से निपटते हैं। गाँव जो कराधान से मुक्त थे, उन्हें परिहारा कहा जाता था, जो लोग ठोस, आयुध की आपूर्ति करते थे, और जो अनाज, मवेशी, सोने या कच्चे माल के रूप में अपने करों का भुगतान करते थे, उन्हें कूप कहा जाता था। ऐसे गाँव भी थे जो करों के बदले में नि: शुल्क सेवाएं और डेयरी उत्पाद की आपूर्ति करते थे।

राजस्व के अन्य स्रोत:

अर्थशास्त्री खानों (खानी), और नमक और शराब के निर्माण के एक राज्य एकाधिकार को संदर्भित करता है। मेगस्थनीज के अनुसार, हथियारों का निर्माण और निर्माण शाही एकाधिकार था। खदानों और कारखानों में दास श्रमिकों को लगाया जाता था।राज्य भी सबसे बड़ा व्यापारी था और मिलावट की जांच करने के लिए व्यवस्था की गई, वजन और उपायों की शुद्धता के लिए प्रदान की गई, और पन्नाध्याक्ष, मुद्राधिकाक्ष, कोठागाँदिकक्ष, पुतवध्याक्ष और सुलक्षयक्ष जैसे अधिकारियों के माध्यम से टोलों का संग्रह किया गया।मेगस्थनीज एस्टिनोमोई के छह बोर्डों को भी संदर्भित करता है, जिनमें से कुछ को इन कर्तव्यों के साथ सौंपा गया था। राज्य ने अपने राजस्व को सात मुख्य प्रमुखों (अय्यसिरा) अर्थात, दुर्गा (गढ़वाले शहरों), रास्त्र (देश की ओर), खानी (खानों) सेतु (इमारतों और उद्यानों), वाना (वन), व्रजा (मवेशियों के झुंड) से प्राप्त किया। और वणिकपट्टा (यातायात की सड़कें)।

व्यापार और नेविगेशन:

विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के सामानों के बीच एक आंतरिक आंतरिक व्यापार था। बाहरी व्यापार विशेष रूप से हेलेनिक (ग्रीक) दुनिया और बर्मा के साथ कुछ हद तक विदेशी देशों के साथ किया गया था। मुख्य निर्यात अलग-अलग मसाले, मोती, हीरे, सूती वस्त्र, हाथी दांत के काम, शंख, आदि थे।मुख्य आयात में घोड़े, सोना, कांच, लिनन आदि शामिल थे, व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में बहुत अधिक था। व्यापार राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत था, जो मौर्य काल के बाद का प्रमुख आयोजक बन गया। उस समय के अठारह प्रमुख हस्तशिल्पियों को इसके अध्यक्ष के तहत स्त्रीनी कहा जाता था, जिसे प्रधान और अल्टामैन को जत्था कहा जाता था। मर्चेंट-गिल्ड (सांगहास और सेनिस) में व्यापार आयोजित किया गया था। माल की बिक्री को राज्य द्वारा कड़ाई से विनियमित किया गया था और कमोडिटी के मूल्य का पांचवां हिस्सा टोल टैक्स लगाया गया था।व्यापारियों को लाभ का प्रतिशत तय किया गया था और अतिरिक्त लाभ राजकोष में चला गया। स्थानीय वस्तुओं पर 5 प्रतिशत और विदेशी उपज पर 10 प्रतिशत राशि शामिल थी। देश में निर्मित वस्तुओं को निर्माण के स्थान पर मुहर लगाई जाती थी, जबकि जो विदेशों से लाई जाती थीं, उन्हें टोल-गेट पर चिपका दिया जाता था। चूंकि टोल-टैक्स उस कमोडिटी के मूल्य पर आधारित था जो शायद पैसे में भुगतान किया गया था और तरह से नहीं।सूदखोरी की प्रथा के बारे में, मेगस्थनीज का कहना है कि भारतीय न तो सूदखोरी में पैसा लगाते हैं और न ही उधार लेना जानते हैं। कौटिल्य ने अस्त्रशास्त्र में संगठित धन उधार दिया है। पंद्रह प्रतिशत प्रतिवर्ष उधार के पैसे पर ब्याज की औसत दर प्रतीत होती है।60 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से एक विशेष व्यावसायिक हित (vyavaharika) संभवत: समुद्री यात्राओं या लंबी दूरी की यात्रा में शामिल वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए लिया गया था। ग्रीक स्रोत टैक्स चोरी करने वालों को मृत्युदंड (क्लेप्टिम टोटेलोस) की सजा सुनाते हैं।मौर्य काल में व्यापार मार्ग या तो मुख्य राजमार्ग या नौगम्य नदियों का अनुसरण करते थे। समुद्री व्यापार पश्चिम के साथ और बर्मा के उत्तरी तट के साथ आयोजित किया गया था। महत्वपूर्ण आंतरिक व्यापार मार्ग उत्तर से दक्षिण-पश्चिम मार्ग (श्रावस्ती से पृथ्वीनाथ तक), उत्तर से दक्षिण-पूर्व मार्ग (श्रावस्ती से राजगृह तक) और पूर्व-पश्चिम मार्ग थे, जो गंगा और यमुना के नदी पाठ्यक्रमों का अनुसरण करते थे । उत्तर-पश्चिम (तक्षशिला के क्षेत्र में) से पाटलिपुत्र तक का शाही राजमार्ग सबसे महत्वपूर्ण मार्ग माना जाता था।यह मार्ग पूर्व में गंगा के साथ ताम्रलिप्ति के बंदरगाह तक विस्तृत था। पूर्वी तट पर तमलुक (ताम्रलिप्ति) और पश्चिमी तट और ब्रोच और सोपारोन उन समय में भारत के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री बंदरगाह थे। पूर्वी तट के समुद्री मार्ग में भारी ट्रैफ़िक दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जहाज निर्माण उद्योग पर राज्य का काफी नियंत्रण था।

शिल्प और उद्योग:

मौर्यों के अधीन भारत के राजनीतिक एकीकरण का एक और महत्वपूर्ण परिणाम था, और एक मजबूत केंद्रीकृत सरकार का नियंत्रण विभिन्न शिल्पों को दिया गया प्रोत्साहन था। मेगस्थनीज ने कारीगरों और शिल्पकारों को भारत समाज के सात खंडों में चौथे वर्ग के रूप में संदर्भित किया है।Arthasastra कारीगरों और कारीगरों के लिए नियम नीचे देता है। वे या तो स्वतंत्र रूप से काम कर सकते थे या गिल्ड में संगठित थे। दोनों में से, बाद वाली प्रणाली को प्राथमिकता दी गई थी। इसके अलावा, राज्य ने कुछ कारीगरों जैसे कि कवच, जहाज बनाने वाले आदि को भी नियुक्त किया था, जिन्हें कर से छूट दी गई थी, लेकिन उन्हें राज्य की कार्यशालाओं में काम करना पड़ा।कपड़ा श्रमिकों के गिल्ड इस समय प्रमुख रहे होंगे क्योंकि देश में कई स्थानों पर अस्त्रशास्त्र का उल्लेख है जो वस्त्रों में विशिष्ट हैं। मधुरा, अपरान्त, कलिंग, काशी, वंगा, वत्स और महिसा में सूती कपड़े बनाए जाते थे। वंगा (पूर्वी बंगाल), पुंद्रा (पश्चिम बंगाल) और सुवर्णकुद्या (असम में) सफेद और नरम वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था, काशी और पुंदरा लिनन के कपड़ों के लिए प्रसिद्ध थे, कशूमा, और मगध, पटोरा, पेड़ों से बने कपड़े के लिए प्रसिद्ध था।गिल्ड्स को काम पर रखने के लिए काम करना पड़ता था और इसमें दो श्रेणियां शामिल थीं, कर्मकार या भृत्तक जिन्हें एक नियमित मजदूरी के लिए काम करने वाले मुक्त मजदूर और दासों को दास माना जाता था। मौर्य काल में धातुकर्म, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के काम और पत्थर की कटाई अन्य प्रमुख शिल्प और उद्योग थे।

मुद्रा अर्थव्यवस्था और मुद्रा:

मुद्रा का उपयोग, जो पहले की अवधि में शुरू हुआ, विकसित वाणिज्य के कारण मौर्य काल की एक सामान्य विशेषता बन गई। धन का उपयोग केवल व्यापार के लिए नहीं किया गया था; यहां तक कि सरकार ने अपने अधिकारियों को नकद में भुगतान

किया।ऐसा लगता है कि पंच-चिह्नित चांदी के सिक्के, जो मोर के प्रतीकों को ले जाते हैं, और पहाड़ी और अर्धचंद्राकार, जिसे पाना कहा जाता है, ने मौर्यों की शाही मुद्रा बनाई। तांबे के पंच-चिन्हित सिक्के दुर्लभ थे। कॉपर मसिका एक टोकन क्यूरेंसी थी और माशिका के चौथाई टुकड़ों को काकिनी कहा जाता था। कौटिल्य में राज्य के अधिकारियों को संयोग के प्रभारी, सुवर्णध्याक्ष, लक्षमणाद्यक्ष और रूपदर्शका का उल्लेख है।

मौर्य कला स्तंभ और मूर्तियां:

सुप्रसिद्ध कला इतिहासकार एके कोमारस्वामी मौर्य कला को दो, स्वदेशी कला और आधिकारिक या अदालत कला में विभाजित करते हैं। स्वदेशी कला का सबसे अच्छा उदाहरण दो मुक्त खड़े पत्थर के आंकड़े हैं - पार्खम से एक यक्ष छवि और बेसनगर से एक यक्षी मूर्तिकला। इस शैली का एक अधिक आदर्श उदाहरण एक बड़ी महिला हैपटना से कौरी-भालू और एक पुरुष यक्ष। मूर्तियों के इस समूह से पता चलता है कि मौर्य काल तक स्वदेशी स्कूल अच्छी तरह से विकसित और स्थापित था। अशोक के अधीन आधिकारिक कला का प्रतिनिधित्व अखंड स्तंभों द्वारा किया जाता है, जिस पर राजा के मंदिरों को उकेरा गया था।ये खंभे पत्थर की सतह को काटने और चमकाने में एक उच्च विकसित तकनीक के बेहतरीन उदाहरण हैं। प्रत्येक स्तंभ के तीन भाग होते हैं: नींव के नीचे का भाग, शाफ्ट या स्तंभ और पूंजी। सहारा जमीन में दफन है।शाफ्ट, जो बलुआ पत्थर के एक टुकड़े से बना है, एक अन्य एकल पत्थर के टुकड़े से बनी राजधानी का समर्थन करता है। गोल और थोड़ा पतला शाफ्ट अत्यधिक पॉलिश है और इसके अनुपात में बहुत सुंदर है। राजधानी, जो स्तंभ का तीसरा हिस्सा है, में कुछ सूक्ष्म रूप से निष्पादित जानवरों की आकृतियाँ, पवित्र धर्म-चक्र प्रतीक हैं जो जानवरों की मूर्तियों और उल्टे या घंटी के आकार वाले कमल के साथ उत्कीर्ण हैं।इन स्तंभों की राजधानियों को वास्तविक रूप से चित्रित किया गया था और इसमें जानवरों के समूह शामिल थे। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सारनाथ है। इसमें ऑफरॉडर्ड शेर शामिल हैं जो मूल रूप से एक धर्म चक्र का समर्थन करते थे। ये हाथी, घोड़े, बैल और शेर को राहत देने वाले एक अबेकस पर आराम करते हैं जो चार छोटे धर्म-चक्रों (24 प्रवक्ता के साथ) से अलग होते हैं।

1. लौरिया-नंदनगढ़ में मुकुट का आकार एक अकेला शेर है, जबकि अबराम को भ्रामरीगिरी की एक पंक्ति या उनके भोजन को चखने वाले हमास द्वारा सुशोभित किया गया है।

2. रामपुरवा में एक खंभे पर एक बैल होने की सूचना दी गई है और दूसरे खंभे पर शेर का रूप है।

3. संकिसा (फर्रुखाबाद जिला, यूपी) में राजधानी के रूप में एक हाथी है।

4. बसहर-बखिरा स्तंभ में एक ही शेर की राजधानी है।

5. रुम्मिंदर स्तंभ के शिलालेख में घोड़े की राजधानी थी लेकिन यह अब अनुपस्थित है।

6. मौर्य काल की एक और उल्लेखनीय पशु आकृति धौली में हाथी है। हालांकि, यह एक बहुत ही अलग परंपरा से संबंधित है और जानवरों की राजधानियों के साथ बहुत कम है।

मौर्य स्तंभों के लिए दो प्रकार के पत्थर का उपयोग किया गया था - मथुरा के आसपास के क्षेत्र से धब्बेदार लाल और सफेद बलुआ पत्थर और वाराणसी के आसपास के क्षेत्र से प्राप्त बफ रंग के चुनार बलुआ पत्थर।स्तंभ की राजधानियों में एकरूपता है जो यह बताती है कि वे सभी एक ही क्षेत्र के शिल्पकारों द्वारा बनाए गए थे। एक दिलचस्प अपवाद आंध्र में अमरावती से स्तंभ का टुकड़ा है। यह स्थानीय रूप से उपलब्ध क्वार्टजाइट से बना है और लगता है कि इसे स्थानीय रूप से काटा, आकार दिया गया है, और यहां तक कि पॉलिश भी किया गया है।

रॉक-कट आर्किटेक्चर:

अशोक को पूरे भारत और अफगानिस्तान में 84,000 स्तूप बनाने का श्रेय दिया जाता है। ह्वेन त्सांग, अपनी भारत यात्रा (सातवीं शताब्दी ईस्वी) के दौरान, कहा जाता है कि इन स्तूपों की काफी संख्या देखी गई है, लेकिन उनमें से अधिकांश हमारे पास नहीं आए हैं।इनका सबसे अच्छा उदाहरण सांची (भोपाल के पास) में प्रसिद्ध स्तूप है। अशोक द्वारा बनाया गया मूल ईंट स्तूप शायद आधे से ज्यादा 'वर्तमान आयामों' का नहीं था। वर्तमान रेलिंग के अलावा अशोक की पुरानी और छोटी रेलिंग के लिए एक बाद का प्रतिस्थापन था।मौर्यों की एक अन्य महत्वपूर्ण विरासत गुफाएं हैं, कठोर और दुर्दम्य चट्टानों से बाहर निकलीं, जो भिक्षुओं (विहार) के लिए आवास थीं और चर्चों और असेंबली हॉल (चैत्य) के उद्देश्य से भी काम करती थीं।अशोक और उनके पोते दशरथ ने बोधगया के पास बाराबर पहाड़ियों में बनी कई ऐसी गुफाओं में निवास किया और उन्हें अजीविका संप्रदाय के भिक्षुओं को दान दिया। दो प्रसिद्ध बराबार गुफाओं (सुदामा और लोमश ऋषि गुफाओं) का विवरण रॉक-कट वास्तुकला पर लकड़ी की वास्तुकला का स्पष्ट प्रभाव दिखाता है।

अन्य वास्तुशिल्प अवशेष:

(ए) महलों:

मेगस्थनीज कहता है कि पाटलिपुत्र में मौर्य महल उतना ही शानदार था जितना कि ईरान की राजधानी में। पत्थर के खंभे और स्टंप के टुकड़े, 80-स्तंभ वाले हॉल के अस्तित्व का संकेत देते हैं, आधुनिक पटना के बाहरी इलाके, कुमराहार में खोजे गए हैं।वह मौर्य की राजधानी पाटलिपुत्र में लकड़ी की संरचना की बात करता है, जो ग्रीक और लैटिन लेखकों को पालिबोथरा के रूप में जानता है। मौर्यकालीन लकड़ी का महल कम से कम 4 वीं शताब्दी ईस्वी के अंत तक जीवित रहा जब फाह्यान ने भारतीय का दौरा किया और उसे इतना अचरज हुआ कि उसने इसे "स्प्रेट्स का काम" माना। ऐसा लगता है कि महल को आग से नष्ट कर दिया गया था क्योंकि पटना के पास कुमरहर में मिले जले हुए अवशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है।

(ख) टेराकोटा वस्तुएँ:

कोई कम महत्वपूर्ण नहीं टेराकोटा का एक समूह है जो पुरातात्विक खुदाई के दौरान कई मौर्य स्थलों पर पाया गया है। ये आमतौर पर सांचों से बनाए जाते हैं। मिट्टी में देवी-देवता बनाने की परंपरा, जो पूर्व-ऐतिहासिक काल में वापस आती है, इन वस्तुओं की खोज अहिछत्र में मौर्य स्तरों पर की गई है। टेराकोटा

का उपयोग खिलौने बनाने के लिए भी किया गया था और इनमें मुख्य रूप से पहिएदार जानवर होते हैं, जो एक पसंदीदा हाथी होता है।[10]

संदर्भ

[1] Smith, Vincent Arthur (1920), The Oxford History of India: From the Earliest Times to the End of 1911, Clarendon Press, *पपृ॰* 104–106, *मूल से* 10 *मई* 2020 *को पुरालेखित*, *अभिगमन तिथि* 21 *जून* 2020

[2] Majumdar, R. C.; Raychaudhuri, H. C.; Datta, Kalikinkar (1950), An Advanced History of India (Second *संस्करण*), Macmillan & Company, *पृ॰* 104, *मूल से* 10 *मई* 2020 *को पुरालेखित*, *अभिगमन तिथि* 21 *जून* 2020

[3] Schwartzberg, Joseph E. A Historical Atlas of South Asia Archived 2020-05-10 at the Wayback Machine, 2nd ed. (University of Minnesota, 1992), Plate III.B.4b (p.18) and Plate XIV.1a-c (p.145)

[4] Hermann Kulke 2004, पृ॰ 69-70.

[5] Stein, Burton (2010), A History of India, John Wiley & Sons, *पृ॰* 74, *आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰* 978-1-4443-2351-1, *मूल से* 8 *मई* 2020 *को पुरालेखित*, *अभिगमन तिथि* 21 *जून* 2020, In the past it was not uncommon for historians to conflate the vast space thus outlined with the oppressive realm described in the Arthashastra and to posit one of the earliest and certainly one of the largest totalitarian regimes in all of history. Such a picture is no longer considered believable; at present what is taken to be the realm of Ashoka is a discontinuous set of several core regions separated by very large areas occupied by relatively autonomous peoples.

[6] Ludden, David (2013), India and South Asia: A Short History, Oneworld Publications, *पपृ॰* 29–3, *आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰* 978-1-78074-108-6, The geography of the Mauryan Empire resembled a spider with a small dense body and long spindly legs. The highest echelons of imperial society lived in the inner circle composed of the ruler, his immediate family, other relatives, and close allies, who formed a dynastic core. Outside the core, empire travelled stringy routes dotted with armed cities. ... In most janapadas, the Mauryan Empire consisted of strategic urban sites connected loosely to vast hinterlands through lineages and local elites who were there when the Mauryas arrived and were still in control when they left.

[7] Coningham, Robin; Young, Ruth (2015), The Archaeology of South Asia: From the Indus to Asoka, c.6500 BCE – 200 CE, Cambridge University Press, *पपृ॰* 451–466, *आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰* 978-1-316-41898-7, *मूल से* 11 *मई* 2020 *को पुरालेखित*, *अभिगमन तिथि* 21 *जून* 2020

[8] Coningham, Robin; Young, Ruth (2015), The Archaeology of South Asia: From the Indus to Asoka, c.6500 BCE – 200 CE, Cambridge University Press, *पृ॰* 453, *आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰* 978-1-316-41898-7, *मूल से* 8 *मई* 2020 *को पुरालेखित*, *अभिगमन तिथि* 21 *जून* 2020

[9] Dyson, Tim (2018), A Population History of India: From the First Modern People to the Present Day, Oxford University Press, *पृ॰* 16–17, *आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰* 978-0-19-882905-8, Magadha power came to extend over the main cities and communication routes of the Ganges basin. Then, under Chandragupta Maurya (c.321–297 bce), and subsequently Ashoka his grandson, Pataliputra became the centre of the loose-knit Mauryan 'Empire' which during Ashoka's reign (c.268–232 bce) briefly had a presence throughout the main urban centres and arteries of the subcontinent, except for the extreme south.

[10] Avari, Burjor (2007). India, the Ancient Past: A History of the Indian Sub-continent from C. 7000 BC to AD 1200 Archived 2020-05-11 at the Wayback Machine Taylor & Francis. ISBN 0415356156. pp. 188-189.